ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

बुन्देली के वीरता–परक काव्य का अनुशीलन

Bundeli's Heroic Poetry

Paper Submission: 05/03/2021, Date of Acceptance: 17/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

जी.पी. अहिरवार
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, दमोह,
मध्य प्रदेश, भारत

वीरता पौरूष की विभूति और वाणी का श्रृंगार है, इसलिए संसार की सभी समृद्ध भाषाओं में वीरों की प्रशस्ति और उनके दिव्य गुणगान की परम्परा अति प्राचीन काल से विद्यमान है। भारतीय साहित्य में ऋग्वेद में वीर शब्द शूर अथवा योद्धा के अर्थ में व्यवहृत हुआ है। रस सिद्धांत की दृष्टि से वीर रस का सीधा सम्बन्ध युद्धवीर से है। बुन्देलखण्ड वीरों के शौर्य की भूमि है। ईसा की बारहवीं शताब्दी से लेकर अद्यावधि इस शौर्याचंल में वीरता से भरा साहित्य रचा जाता रहा है। ''इत यमुना उत नर्मदा इत चंबल उत टोंस'' के भू–भाग में फैला बुन्देलखण्ड वीरों की दुधारी खड़ग और तीक्ष्ण बाणों से अनुरेखित रहा है। यहाँ श्रृंगार की मसृण धार बही है पर वीरभाव की स्त्रोतस्विनी अधिक प्रभावपूर्ण रही है। यहाँ के कवियों ने अपनी ओजस्वी एवं तेजस्वी लेखनी से इस मिट्टी का गुणगान किया एवं यहाँ अवतरित वीर नारी–पुरूषों की हुंकारों को काव्यबद्ध किया है। यहाँ के कवि, योद्धा और शासक रहे हैं। अतः उनके द्वारा रचित काव्य अधिक प्रमाणिक एवं प्रेरणास्पद बन गया है। इस वीर–भूमि बुन्देलखण्ड में सृजित वीरभाव का अनुशीलन करना ही प्रस्तुत शोध–पत्र का अभिप्रेय है। हिन्दी साहित्य के वीर काव्य की परम्परा वेदों से चलती है और संस्कृत प्राकृत, अपभ्रंश काव्य से होती हुई आधुनिक काल तक आई है। वर्ण्य विषय काव्यरूप और शैलियों की दृष्टि से यह पूर्व परम्परा वीर काव्य की आधारभूमि है। वीर–रस सदैव महाकाव्य रचना का आधार रहा है। सभी देशों के महाकाव्यों का विकास वीर आख्यानों से हुआ है। प्रत्येक देश के इतिहास में वीर–युग, वीरता की भावनाएँ वीर पुरूष और वीरता के गायक, कवियों का उल्लेख मिलता है। प्राचीन महाकाव्यों बाल्मीकि रामायण, महाभारत से लेकर हिन्दी के आदि महाकाव्य पृथ्वीराज रासो और तदन्तर आद्यावधि सभी हिन्दी महाकाव्यों में वीरत्व का स्वर उद्घोष के रूप में वर्तमान रहा है। आदिकाल तो वीर गाथा काल के ही नाम से जाना जाता है। पृथ्वीराज रासो, आल्हा खण्ड़, विजय पाल रासो, इसी युग की रचनाएँ है। परवर्ती काल में रामचरित मानस, रामचन्द्रिका पद्मावत में भी वीर–रस के सुन्दर स्थल है।

Bravery is the adornment of vibhuti and eloquence of virility, so the tradition of valor and praise of the divine in all the rich languages of the world has existed since time immemorial. In Indian literature, the word Veer in the Rigveda has been interpreted to mean Shur or warrior. From the point of view of Rasa theory, Veer Rasa is directly related to Yudhveer. Bundelkhand is the land of valor of valor. From the twelfth century to the end of this century, heroic literature has been composed in this gallantry. Here there is a decorative edge of makeup, but the source of heroism has been more effective. The poets here sing the praises of this clay with their powerful and stunning writing and have poached the chants of the brave men and women who have descended here. The poet, warrior and ruler has been here. Hence, the poetry composed by him has become more authentic and inspirational. The purpose of the research paper presented is to follow the heroism created in this Veer-Bhoomi Bundelkhand. The tradition of the heroic poetry of Hindi literature runs from the Vedas and from Sanskrit Prakrit, Apabhrash poetry to modern times. This former tradition is the basis of the heroic poetry in terms of poetry and styles of the theme of the subject. Veer-rasa has always been the basis of epic composition.

मुख्य शब्द : मसृण, तीक्ष्ण, वीरभाव, उद्घोष, शौर्य, त्याग, बलिदान, अल्हैत, गम्भीर घोष, बनाफरी।
Masrin, Pungent, Heroism, Proclamation, Gallantry, Renunciation, Sacrifice, Alhait, Gambhir Ghosh, Banfari

प्रस्तावना

विवेच्य शोध पत्र में वीरता से ओत–प्रोत बुंदेली के चार ग्रंथों का अनुशीलन किया गया है। इसमें लोक महाकाव्य आल्हा (जगनिक), छत्र प्रकाश (गोरेलाल), वीर हरदौल (कवि ब्रजेश) और लक्ष्मीबाई रासौ (मदनेश) बुंदेली के प्रतिनिधी काव्य हैं। इन चारों प्रबंधों में बुन्देलखण्ड के चार वीर नायकों की शौर्य गाथाएँ अंकित हैं। वस्तुतः आल्हा, छत्रसाल, हरदौल और लक्ष्मीबाई बुन्देलखण्ड़ के गौरव हैं प्रस्तुत शोध इन्हीं गौरव व्यक्तित्वों पर आधारित हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

बुन्देलखण्ड के कवि, यहॉ के योद्धा और शासक भी रहे हैं । अतः उनके द्वारा रचित काव्य अधिक प्रमाणित और प्रेरणास्पद बन गये हैं। इस वीर भूमि बुन्देलखण्ड में सृजित वीरभाव, वीर–वीरांगनाओं का युद्ध–कौशल, देश–प्रेम, लोक संस्कृति, लोक व्यवहार एवं पारिवारिक ताने–बाने की बुनाहट से परिचित कराना ही प्रस्तुत शोधपत्र का अभिप्रेय रहा हैं।

लोक महाकाव्य आल्हा

लोक महाकाव्य आल्हा एक ऐतिहासिक विकसनशील काव्य है जो बारहवीं शताब्दी में महाकवि जगनिक द्वारा लिखा गया। इसमें राजा–महाराजाओं के युद्ध प्रसंगों को मुख्यतः चित्रित किया गया है। आचार्य रामचंद शुक्ल ने इसे परमाल रासों नाम से उद्धृत किया है। इसमें आल्हाखण्ड की वीर गीतियों को कथा–सूत्र में पिरोया गया है। आल्हा या आल्हाखण्ड में बावन लड़ाईयों का उल्लेख किया गया है। इन लड़ाईयों की कथाओं से राजा परमार्दिदेव (परमाल) के सेना प्रमुख आल्हा–ऊदल, मलखान आदि की वीरता और बलिदान का वर्णन किया गया है। जगनिक के गीत आल्हा के नाम से प्रसिद्ध है और बरसात में गाये जाते हैं। गाँवों में मेघ गर्जन के बीच किसी अल्हैत के ढोल के गम्भीर घोष के साथ यह वीर हुंकार सुनाई देती है।

''बारह बरस लौ कूकर जिये, और सोरह लौ जिये सियार।
बरस अठारह छत्री जीये, आगे जीवन को धिक्कार।।''

मामा माहिल की चुगलखोरी एवं राजकुमारियों से विवाह के प्रसंगों से इन लड़ाईयों को आधरभूमि मिली है। छलछद्म बहुरूपियापन और जादू–टोने से भरी ये गाथाएँ रोमांच और संवेदनात्मकता जगाती हैं। अस्त्र–शस्त्र संचालन,युद्ध–कौशल और भीषण मारकाट का जीवन्त चित्रण इस काव्य में विस्तार से हुआ है। कवि ने राजमहलों और किलों के वैभवपूर्ण वर्णन के साथ प्रकृति, पर्वोत्सव, विवाहोत्सव आदि के लोकरंजक चित्र भी अंकित किए है। भाव और रस वर्णन के अंतर्गत आल्हा महाकाव्य में वीर–रस का ऐसा उत्कर्ष पूर्ण प्रस्तुतीकरण हुआ है जो अन्यत्र नहीं मिलता। आलम्बनों और उद्दीपनों की वृहद भूमि पर अनुभावों और संचारी भावों की अनेकविध भित्तियाँ निर्मित हुई है। वात्सल्य रस और करूण रस का भावोद्दीपक चित्रण भी यहाँ मिलता है।

कवि का वैचारिक पक्ष इस दिशा की ओर इंगित करता है कि इतिहास की सच्चाई भावात्मकता से कितनी संघुलित हो जाती है। बुंदेलखण्ड से दिल्ली तक फैली राजसत्ताओं का केन्द्रीय बिन्दु प्रतीशोध, राजलिप्सा और बहुसंख्यक वैवाहिक भोग की वृत्ति रही है। कवि ने अपने चिंतन से यथार्थ की भूमि पर भावना का ऐसा उद्यान बनाया है जो मानवीय संवेदनाओं के उन्नयन की समझ जगाता है। कवि को बनाफर वंशीय आल्हा, ऊदल, लाखन, मलखान, सैयद ताल्हन, माहिल मामा आदि पुरूष पात्रों एवं मल्हनादे, फुलवां, सुनवा, चंद्रावली आदि स्त्री पात्रों के चरित्र चित्रण में अद्भुत सफलता मिली है। ममता, स्नेह, ईष्या–द्वेष, वीरता और उत्सर्ग के आदर्श इन पात्रों में अभिभूत हुए है। सामाजिक जीवन की विविधताएँ और देश प्रेम की भावनाएँ भी यहाँ प्रस्तुत हुई है। आल्हा महाकाव्य में बुंदेली भाषा का सुघड़ सौंदर्य है। बुंदेली का बनाफरी रूप यहाँ प्रयुक्त है। भाषा में मुहावरों का संघुलित प्रयोग है और ओजगुण की पुष्ठ आवृति है। वीर छंद में लिखा यह समूचा काव्य लय और गीतात्मकता में बेजोड़ है। अलंकार यहाँ अनायास आ गये हैं। कवि का इनके प्रति आग्रह कम ही रहा है।

कवि की लोक एवं राष्ट्रीय चेतना की दिशाएँ लघुता में व्यापकता संजोती है। कवि ने लोक–जीवन, लोक –संस्कार एवं लोक–संस्कृति के अनेकविध चित्र खींचे हैं। सचमुच वह ऐसा लोक कवि है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गहरे उतरता चला गया है। लोक रूढ़ियाँ और लोक परम्पराएँ कैसे लोक आनंद में पर्यवसित हो जाती है, इसके अनूठे उदाहरण इस काव्य में निहित हैं। कवि की राष्ट्रीय भावना उसके देश प्रेम में दिखाई देती है पर यह देश प्रेम राजाओं के अपने राज्य या क्षेत्र विशेष तक सीमित है। हर राजे–महाराजे का अपना देश प्रेम है जिसके लिए वह लड़ता–मरता है। आल्हा–ऊदल का देश प्रेम सर्वोत्कृष्ट है जिसमें ये परमवीर, स्वदेश और स्वत्व के लिए प्राणार्पण करने हेतु सन्नद्ध है।

छत्रप्रकाश

हिन्दी साहित्य के रीतिकालीन कविता संसार में लाल कवि कृत छत्रप्रकाश अनूठा अद्वितीय और अविस्मरणीय काव्य है, जिसका अंग्रेजी अनुवाद पहले छपा और हिन्दी संस्करण बाद में। वस्तुतः 'छत्रप्रकाश' एक चरित–काव्य है। 'छत्रप्रकाश' में पन्ना नरेश महाराजा छत्रसाल के जीवन के जन्म से लेकर लोहागढ़ विजय तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है। महाराजा छत्रसाल की आज्ञा से लिखित 'छत्रप्रकाश' के छब्बीस अध्यायों में विभक्त यह एक ऐतिहासिक काव्य है। बुन्देलों के आदि पूर्वज काशीराज, वीरभद्र, पंचम, रूद्रप्रताप, उदयजीत, मधुकरशाह, चंपत राय और छत्रसाल की प्रदीर्घ परम्परा 'छत्रप्रकाश' में वर्णित हुई है।

गोरेलाल कवि के 'छत्रप्रकाश' में दो पक्ष उभरकर आते है। एक तो बुन्देल भूमि,बुन्देलखण्ड के ओरछा, महोबा आदि क्षेत्र के हिन्दू राजे और दूसरी ओर औरंगजेब के पक्षधर मुगल फौजदार और सेनापति। इन दोंनों पक्षों के बीच के संघर्ष को कवि ने न्याय और अन्याय की संघर्ष गाथा के रूप में स्वीकार किया है। छत्रसाल सत्य और न्याय के रक्षक थे। उन्होंने गौ, ब्राम्हण, वेद और समाज की रक्षा की और अत्याचारियों को दण्डित किया। इस तरह 'छत्रसाल' के चरित्र में नैतिकता अध्यात्म और भक्ति–भाव मूल भित्ति के रूप में स्थित है। उनका आदर्श चरित्र बुन्देलखण्ड की विराट

सीमा में एक जाज्वल्यमान नक्षत्र की तरह आलोकित हुआ है।

कवि लाल ने 'छत्रप्रकाश' में वीर चरित्रों के उद्घाटन के साथ बुन्देली भाषा और काव्य–शिल्प को भी उत्कृष्टता प्रदान की है। बुन्देली का ऐसा स्वरूप अन्य कवियों में प्रायः नहीं मिलता। जायसी के पदमावत् और तुलसी की रामचरित मानस की दोहा चौपाई पद्धति को स्वीकारित करते हुये 'लाल कवि' ने केवल दो ही छंदो को प्रयुक्त किया है। भाषा में लालित्य है। शब्द मैत्री और गेयता को भी कवि ने यथासाध्य बनाये रखा है। कवि में अलंकारिकता का बोध नहीं है। केवल उपमा अलंकार की बहुलता है। ओज गुण से ओतप्रोत उनकी काव्य रचना दीप्ति–भाव को जागृत करती है। लाल कवि का छत्रप्रकाश बुन्देली काव्य साहित्य की अनमोल निधि बनकर उपस्थित होता है।

वीर हरदौल

बुन्देलखण्ड के आशु कवि बृजेश ने 'वीर हरदौल' कृति के रूप में एक श्रेष्ठ वीर काव्य की रचना की है। बुन्देलखण्ड में वीर काव्य की परम्परा का विस्तृत रूप दिखाई देता है इन वीर काव्यों के माध्यम से कवियों ने मानवीय शौर्य, त्याग, बलिदान और आजादी से प्रेम जैसे उद्देश्यों के लिये संघर्ष गाथा लिखी है। ''वस्तुतः कवि बृजेश ने स्वदेश प्रेम और स्वतंत्रता की चाहत के परिप्रेक्ष्य में वीर हरदौल की प्रतिष्ठा की है। इस काव्य का कथावृत्त समूचे बुन्देलखण्ड में विस्तारित है। वीर हरदौल उस राष्ट्रबोध के महारथी है जो महान शौर्य संकल्पों से आप्लावित है। अपने पूर्वजों की भारत भूमि को शत्रुओं द्वारा आक्रांत होने की पीड़ा से हरदौल में राष्ट्रीयता का भाव जाग उठता है और वे राष्ट्र भक्ति की शपथ लेते हैं–

''कहत बृजेश जो मरे है देश हेतु यहाँ,
उनके पिण्ड पुन्य पान गया कराऊँगा।
शपथ राम राजा की बेतवा को बीच देत,
तेरे खिन्न आनन की खिन्नता मिटाऊँगा।।''

कवि का यह काव्य केवल युद्ध भूमि से ही अपनी राष्ट्रीय भावना व्यक्त नहीं करता अपितु साम्प्रदायिक एकता का भाव भी इस काव्य के माध्मय से अभिव्यक्त हुआ है। हिन्दू, मुस्लिम, यहूदी या जैन का भेद समाप्त कर कवि एकता का भाव जगाता है। मथुरा और मक्का की एकता की लक्ष्य साधना इस काव्य में दर्शित है। कवि असत्य पर सत्य की, अन्याय पर न्याय की और द्रोह पर प्रेम की भावना को परिपुष्ट करता है। साम्प्रदायिक सद्भाव का स्पष्ट संकेत यहाँ दिखाई देता है–

''चाह होय मुस्लिम या हिन्दु व यहूदी कोय,
पन्थी, कबीर, जैन बुद्ध न सताया जाय।
होय धर्म पक्का हमें मथुरा ओ मक्का एक,
किन्तु दुराचारी का होंसला हिलाया जाय।।''

कवि ने देश प्रेम का ऐसा वातावरण सृजित किया है जिसमें नारियॉ भी अपने आपको वीरांगना बनने का गौरव धारण करती हैं, चाहे जुझार सिंह की पत्नी हो अथवा वीर हरदौल की युवा रानी हो, दोंनों ही क्षात्र तेज से ओत–प्रोत हैं। युद्ध में वीर हरदौल को रणक्षेत्र में विदा करते हुये हरदौल की पत्नी यह कहने से नहीं चूकती –

''हलचल तुफान प्रलय आवैं, हिमगिर सा पैर अड़ा देना।
हँसते–हँसते इस देश हेतु माता पर शीश चढ़ा देना।।''

इस काव्य का उत्तर पक्ष करूणरस से ओत–प्रोत है जिसमें बुन्देलखण्ड की धार्मिक और सामाजिक परम्पराओं का उत्कट रूप दिखाई देता है। मुगलों की कूटनीति के परिणाम स्वरूप जुझार सिंह की आज्ञा से अपने भाई हरदौल को जहर देने का प्रसंग करूणा से ओत–प्रोत है। जुझार की पत्नी और देवर हरदौल के बीच का मातृ–प्रेम दिव्यता से ओत–प्रोत है पर इस प्रेम को अवैध मानते हुए राजाज्ञा देवर–भाभी के प्रेम की परीक्षा लेने को विवश करती है। भाभी द्वारा परोशे गये विषमय भोजन से हरदौल की मृत्यु तो हो जाती है पर हरदौल का प्रेम और प्राणार्पण स्वर्गीय बन जाता है। अपनी बहिन कुँजा की प्रार्थना पर श्मशान की चिता से हरदौल प्रकट हो उठते हैं और संदेश देते हैं कि अपनी बहिन की पुकार पर भाँजी के विवाह के लिये चीकट देने वे सदा उपस्थित रहेंगे। अस्तु देवर–भाभी का ममत्व, भाई–बहिन का प्रेम और मामा भाँजी का स्नेह जिस उत्कर्ष पर इस काव्य में पहुँचा है वह अन्यत्र नहीं दिखाई देता। इस तरह वीर हरदौल काव्य वीर रस और करूण रस की समवंत पीठिका पर स्थित है। जितना यहॉ पर वीर भाव और देश प्रेम का तीक्ष्ण प्रवाह मिलता है उतना ही पारिवारिक भावों की प्रगाढ़ता का उन्नयन दिखाई देता है।

लक्ष्मी बाई रासो

कवि मदनेश द्वारा लिखित लक्ष्मीबाई रासो प्रमुख वीर काव्य है। डॉ. सीता किशोर स्वीकारते हैं कि बुन्देलखण्ड के रासो काव्य यशो–गाथा होकर भी संघर्षो का गौरव–गान हैं। इसी रूप में मदनेश का रासो भी बुन्देलखण्ड और भारतीय गौरव की गाथा है। कवि ने 1857 की क्रांति के संदर्भ में इस ग्रंथ की रचना की और राट्रीय नवजागरण का सूत्रपात किया है। कवि केवल लक्ष्मीबाई रासो की रचना रानी की महत्ता दिखानें के लिये नहीं करता, अपितु अंग्रेजी राज्य की गलत नीतियों के प्रति विद्रोह का स्वर जगाना चाहता है। कवि ने इस काव्य के माध्यम से प्रमुखतः झाँसी की रानी और नत्थे खाँ के बीच हुये तीन युद्धों के माध्यम से रानी विजय दिखाई है। रानी का पक्ष न्याय, सत्यता और धर्म निष्ठता का है जबकि नत्थे खाँ इसके विपरीत शोषण, अन्याय और अधर्म का प्रतीक है। कवि ने हिन्दू, मुस्लिम एकता का भी मधुमय संदेष इस काव्य के माध्यम से दिया है। इस युद्ध काव्य में केवल सेना ही युद्ध नहीं करती बल्कि जनता जनार्दन भी युद्ध में अपनी आहूति डालती है। झाँसी की महारानी और बुन्देलखण्ड की रक्षिका लक्ष्मीबाई अद्भुत वीरता की देवी है। वह मर्दाना वेश बनाकर तलवार बाजी में महारथी बन जाती है। समस्त लोक–मर्यादाओं को छोड़ती हुई यह बुन्देलखण्ड की गृहणी अखाड़े में जाकर युद्ध कला सीखती है–

"तुमक चलावे में भई बाई अधिक प्रवीन।
शब्दबेध घालन लगी गोली गहब गलीन।।
लै कृपान घालैं जबै भजत वाज असबार।
लोंग फूल काटन लगी सूरन में सरदार।।"

बुन्देली के वीर काव्यों में राष्ट्रीयता का क्षेत्रपरक अर्थ क्षम्य है। इन काव्यों का देश प्रेम अपने–अपने राज्यों तक सीमित है। यहाँ के हर राजे महाराजे का अपना निर्धारित भू–भाग है और उसी के लिये उनका प्रेम प्रकट होता है। यहाँ के योद्धा अपने–अपने राज्य के प्रति समर्पित हैं और अपना बलिदान देने तत्पर रहते है। इसलिए उनका देश प्रेम स्थानीय या क्षेत्रीय है। उसमें व्यापकता देखना सम्भव नहीं है। यहाँ की राजपूत, चंदेल, चौहान जैसी वीर जातियों में परस्पर युद्धों का कारण प्रतिशोध की भावना है। ऊदल और छत्रसाल किशोर अवस्था में ही प्रतिशोध लेने का संकल्प लेते हैं और अपने पितृ हन्ताओं के विरूद्ध संघर्ष करते है। युद्ध का दूसरा कारण राजकुमारियों का वरण या अपहरण है। आल्हखण्ड की लड़ाईयाँ राजकुमारियों के वैवाहिक प्रसंगों पर अधारित है।

सभी राजे–महाराजे या योद्धा किसी न किसी देवी–देवता के प्रति समर्पित हैं। आल्हा–ऊदल की आराध्य देवी मैहर माता है। रानी लक्ष्मीबाई छेंकुर पूजा करतीं है और छत्रसाल भगवान प्राणनाथ के प्रति समर्पित है। छत्रसाल और हरदौल राम राज्य की स्थापना करने के लिए संकल्पित हैं और प्रजा की सुख–शांति के लिये समर्पित हैं। वे जनता की सुरक्षा और सुख–समृद्धि के लिये प्राणार्पण से जुटे रहते हैं। उनके आदर्श राज्य की कल्पना ऐसे राज्य पर आधारित है जिसमें सभी लोग सुखी हों, सभी निरोग हों और सभी स्वाभिमानी बनें। इन वीर काव्यों में सामाजिक एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव मिलता है। यहाँ हिन्दु और मुसलमान के बीच जातिगत संघर्ष नहीं है। छत्रसाल मुसलमानों पर कोई अत्याचार नहीं करते किन्तु दुष्ट शासकों के अत्याचारों का विरोध करते हैं। लक्ष्मीबाई नत्थे खाँ के विरूद्ध युद्ध करतीं है और ऊदल जम्बे या करिंगा राय के विरूद्ध युद्ध छेड़ते हैं। इन लड़ाईयों का आधार प्रति पक्ष के द्वारा किए गए अनाचार और अत्याचार हैं।

इन काव्यों में यह तथ्य उभरकर आया है कि राजा या राजकुमारों में निहित वीरता ही श्रेयस्कर है उसकी जाति गौण और अमहत्वपूर्ण है। आल्हा और ऊदल बनाफर जाति के माने जाते हैं जो कि उस समय की ओछी जाति कही गई है। अन्य राज्यों के राजागण अपनी राजकुमारियों का विवाह आल्हा–ऊदल से नहीं करना चाहते परन्तु जब उनकी वीरता और शौर्य का प्रभाव प्रकट होता है तो राजे–महाराजे उन्हें अपनी पुत्रियाँ देने में गौरव अनुभव करते हैं। हरदौल के साथ मेहतर बाबा की भी प्रतिष्ठा होती है।

इन काव्यों की नारियॉ अत्यन्त तेजस्विनी हैं। उनमें वीरता, युद्ध कौशल और समर्पण भाव विद्यमान है। मल्हानादे, देवलदे, चन्द्रावली, चित्ररेखा, बेला आदि स्त्रियाँ अपनी वीरता और बुद्धि–कौशल का परिचय देतीं हैं। लक्ष्मीबाई की बहादुरी और सूझबूझ अप्रतिम हैं हरदौल की भाभी चम्पावती और बहिन कुँजा विवेकशील और संवेदना से भरीं हैं। नारियों ने अपनी अस्मिता और संस्कृति की सुप्रतिष्ठा की है। पारिवारिक आदर्श, प्रेम और सामंजस्य की भावना को सभी कवियों ने स्थापित किया है। भाभी के सम्मान के लिये हरदौल विषपान कर लेते है और बहिन कुँजा के लिए स्वर्ग से उतरकर चीकट लाते है। देवर–भाभी और बहिन–भाई का ऐसा प्यार किसी और काव्य में नहीं मिलता। मामा–भाँजी का दिव्य स्नेह इस काव्य की थाती है। मल्हनादे, शिशु ऊदल को अपने बेटे की तरह दूध पिलातीं हैं और चन्द्रावली ऊदल को अपना धर्म भाई मानती हुई भुँजरियों की रक्षा के लिए उसे आहूत करती है। ऐसी पारिवारिकता का आदर्श बुन्देली काव्य का आदर्श बन जाता है।

इन काव्यों के पशु–पक्षी भी मानवीय व्यवहार करते हैं। अपने स्वामी की सेवा और प्राण रक्षा में पशु–पक्षी सदा तत्पर रहते हैं। गजमोतिन के विवाह के लिये हीरामन तोता अहम भूमिका निभाता है तथा आल्हा–ऊदल के हाथी व घोड़े मानवीय व्यवहार करते हैं। ये प्राणी मानवीय संवेदना और प्रेम–स्नेह की पवित्रता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

काव्य शिल्प की दृष्टि से बुन्देली के वीर काव्य–गुण का प्रखर रूप स्थापित करते हैं। इन काव्यों की ठसकीली बुंदेली गांभीर्य और लालित्य सुनिश्चित करती है। बुन्देली शब्दों की मिठास लोक भाषा का परम आदर्श सुनिश्चित करती है। नौटकी का प्रयोग कविता में नाद, लय और संगीत उत्पन्न करता है। आल्हा काव्य शैली हृदयों में हुँकार जगाती है और फाग शैली कविता में रसरंग घोल देती है। अलंकारों के प्रयोग में यहाँ के बुन्देले कवि केशव बन जाते है, शौर्य चित्रण में भूषण से प्रखर हो जाते है, फाग रचना में ईसुरी की प्रतिकृति लगते हैं और छंद रचना पद्धति में तुलसी, जायसी का रूप धारण कर लेते हैं। काव्य शिल्प की ऐसी सुघड़ता बुन्देली काव्य में दिखाई देती है जो उसकी इयत्ता और महत्त को उच्च आसन प्रदान करती है। बुन्देली वीर काव्य निश्चित ही अपने कथ्य में वीर–भावों की त्रिवेणी बहाता है और शिल्प की माधुरी से जन–जन को विमोहित करता है।

निष्कर्ष

बुन्दुली के वीरता–परक काव्य में बुन्देली के चार प्रबन्ध काव्यों के माध्यम से यहॉ के लोक जीवन को चित्रित किया गया है। यहॉ के वीर योद्धाओं का युद्ध–कौशल, राजमहलों का वैभवपूर्ण वर्णन एवं समाज में व्याप्त लोक परम्पराओं को लोक–महाकाव्य आल्हा के माध्यम से चित्रित करने का प्रयास किया गया है। लोक–जीवन में विवाह के प्रेम प्रसंग, चुगलखोरी, छल–छद्म, बहरुपियापन, और जादू टोनें से भरीं ये गाथाएँ कैसे जनमानस में रोमांच का संचार करतीं हैं। इस काव्य में कवि ने लोक जीवन, लोक संस्कार, एवं लोक संस्कृति के अनेक चित्र खीचे हैं।

छत्रप्रकास एक चरित काव्य है जिसमें पन्ना नरेश महाराजा छत्रसाल के जीवन के जन्म से लेकर लोहागढ़ विजय तक की घटनाओं का वर्णन है। छत्रसाल के चरित्र में नैतिकता, अध्यात्म, और भक्तिभाव मूल भित्ती के रूप में विद्यमान है।

वीर हरदौल में कवि ने असत्य पर सत्य की, अन्याय पर न्याय की और द्रोह पर प्रेम की भावना को परिपुष्ट किया गया है। वीर हरदौल पारिवारिक भावना की प्रगाढ़ता का काव्य हैं।

लक्ष्मी बाई रासौ में झॉसी की रानी लक्ष्मीबाई और नत्थे खॉ के बीच हुए युद्धों को बताया गया है जिसमें रानी किस तरह से न्याय, सत्यता और धर्मनिष्ठता पर चलती हुई अपने देश की खातिर अपने आप को बलिदान कर देती है। इस प्रकार से प्रस्तुत शोध पत्र में बुन्देलखण्ड के चार वीर योद्धाओं के शौर्य का संक्षिप्त विवेचन किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *लोक–गाथा काव्य आल्हा –महाकवि जगनिक कृत 1230 प्रकाशन हिन्दी विभाग, सागर वि.वि. सागर सम्पादक– लोक नाथ द्विवेदी सिलाकारी*
2. *चन्देल कालीन लोक महाकाव्य आल्हा –'प्रमाणित पाठ' सम्पादकनर्मदा प्रसाद गुप्त प्रकाशक म. प्र. आदिवासी लोककला परिषद भोपाल(म.प्र.) 2021।*
3. *छत्रप्रकाश–गोरेलाल 'लालकवि'–सम्पादक, डॉ श्यामसुन्दर दास 1712–14*
4. *महाबली छत्रसाल (नाट्य संगीत) भैयालाल व्यास प्रकाशक बुन्देली विकास संस्थान बसारी, जिला छतरपुर (म. प्र.) 2006।*
5. *बुन्देली गीत,मोहनलाल गुप्त 'चातक'कृष्णा प्रकाशन 200 बड़ा बाजार ,झॉसी 2004।*
6. *वीर हरदौल – आशु कवि बृजेश प्रकाशन 1969*
7. *लक्ष्मीबाई रासो– पं. मदन मोहन द्विवेदी कवि 'मदनेश' सं. 1961*
8. *बुन्देलखण्ड के रासौ काव्य,डॉ. श्यामविहारी श्रीवास्तव प्रकाशक आराधना ब्रदर्स, 124/152 सी. गोविन्द नगर कानपुर–1997।*
9. *बुन्देलखण्ड केशरी, महाराजा छत्रसाल बुन्देला, डॉ भगवानदास गुप्त प्रकाशक, म. प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भेपाल (म.प्र.) 1992।*
10. *बुन्देली भाषा साहित्य का इतिहास (तुलनात्मक अध्ययन) डॉ. रामनारायण शर्मा, प्रकाशक, डॉ श्रीमती सुशीला शर्मा, झॉसी 2001।*
11. *बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत, डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी, प्रकाशक–समय प्रकाशन दिल्ली,2000।*